प्रिय सज्जनों, अब मैं आपका ध्यान श्री राधा बल्लभ संप्रदाय की ओर आकृष्ट करता हूँ । क्योंकि इस संप्रदाय से हमारे गाँव तथा उत्तर भारत के काफी भगत जनों का काफी नजदीक का रिश्ता बन चुका है ।

श्री पूज्यपाद श्री हित हरीवंश गुणनायक सुख सम्पत-दम्पत के दाता महाप्रभु हिताचार्य श्री व्यास नन्दन श्री राधा बल्लभ संप्रदाय के अधिष्टदाता सुखदायक श्री मुरलीधर बंसी के अवतार हुए ।

पद

निकस कुञ्ज ठाडे भये भुजा परस्पर अंश ।
श्री राधा बल्लभ मुखं कमल निरख नैन हरीवंश ॥

श्री हिताचार्य महाप्रभु हरीवंश के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री वनचन्द जी महाराज हुए । उन्ही की उपस्थिति में श्री सेवक जी महाराज हुए । जिन्होंने श्री महाप्रभु हरीवंशवाणी का उच्चारण किया । श्री राधा बल्लभ सम्प्रदाय की गद्दी के अधिकारी बहुत संत - महन्त, सिद्ध - प्रसिद्ध हुए । जिसका विवरण इस प्रकार है । श्री मोहन चन्द जी, श्री नागरी दास जी, श्री चतुर्भुज स्वामी जी, श्री कृष्ण चन्द जी, श्री राम दास जी, श्री गोपी नाथ जी, श्री ध्रुव दास जी, श्री हित दामोदर चन्द जी, श्री मुकुन्द दास जी, श्री स्वामी इन्द्रमणी जी, श्री स्वामी रूप लाल जी, श्री रतन लाल जी, श्री गुलाब लाल जी, श्री सुख लाल जी, श्री बल्लभ उत्तम दास जी, श्री प्रेमदास जी, श्री हितदास जी, श्री साध्वी आनन्दी बाई जी, श्री स्वामी हीरा लाला जी, श्री परमानन्द गुरुवर जी के परम प्रिय शिष्य बाबा श्री किशोरी शरणजी (श्री बाबा सूरदास जी) हुए । बहुत अनन्य संत्तों के बाद श्री बाबा सूरदास जी के नाम से सिद्ध प्रसिद्ध महात्मा तिलपत वाले के नाम से जाने गये ।

श्री श्री १००८ श्री बाबा किशोरी शरण जी (बाबा सूरदास जी) उत्तराखंड (यू.पी.) में जिला पौढ़ी गढ़वाल के एक गांव गठरी के एक ब्राह्मण कुल में अवतरित हुए । सात साल की आयु में एक रात अपने समस्त कुटुम्बीजनों को सोता हुआ छोड़ कर हिमालय पर्वत के पहाड़ी क्षेत्र के जंगलों में निकल गये और एक भयानक गुफा के सामने जाकर रोने लगे । इस भयानक जंगल में एक बच्चे की रोने की आवाज़ को सुन कर एक साधु जी महाराज गुफा से बाहर आये और बच्चे को देखकर चकित हो गये तथा बच्चे को गोदी में उठाकर पुचकारते हुए गुफा के अन्दर ले गये । जहाँ पर बाबा श्री सूरदास जी ने ज्ञान और वैराग्य की दीक्षा ली, जब साधु जी महाराज का देहावसान हो गया तो श्री बाबा ने विधिविधान से उनका क्रिया कर्म सम्पन्न किया और कोयल घाटी ऋषिकेश के बीहड़ जंगल में श्री गंगा जी के तट पर कुछ समय तक तपस्या की और तपस्या करते - करते एक दिन माता वैष्णौ देवी के दर्शनों की प्रेरणा जागृत हुई । श्री बाबा वहाँ से माता वैष्णों देवी के दर्शनों के लिए कटरा शहर पहुँचे और दर्शन करने के पश्चात श्री बाबा पंजाब में अमृतसर जा पहुँचें । वहाँ पर श्री बाबा ने एक राधा बल्लभ के एक आलीशान मन्दिर का निर्माण किया

जो आज भी विद्यमान है तथा वहाँ पर अब भी श्री राधा बल्लभ की युगल जोड़ी की पूजा होती है, इसके पश्चात श्री बाबा जालन्धर आ पहुँचें और कुछ समय वहाँ व्यतीत करने के पश्चात एक दिन अचानक श्री बाबा जी के मन में कुछ बैचेनी हुई और वह वहाँ से चल दिये तथा गुजरात में नर्मदा नदी के तट पर जा पहुँचे । वहाँ जाकर श्री बाबा ने जमीन के अन्दर एक गुफा बनाई तथा उस गुफा के अन्दर योग सिद्धि और तांत्रिक सिद्धी सम्पूर्ण की । फिर गुजरात में एक राधा बल्लभ के मन्दिर का निर्माण किया और छोटे-मोटे जगह-जगह मन्दिर बनवाते हुए एक बीहड़ जंगल में यमुना नदी के तट पर तपस्या की और पेड़ों के ऊपर रहकर गुज़र-बसर की । अपनी वहाँ की तपस्या पूरी करने के उपरान्त श्री बाबा वृन्दावन पहुँच गये । वहाँ पर पहुँच कर श्री बाबा श्री परमानन्द जी महाराज जी से काफी प्रभावित हुए तथा दर्शन लाभ उठाया और उनको अपना गुरु मानकर उनसे कण्ठी मन्त्र धारण किया । कुछ समय वृन्दावन में गुजारने के उपरान्त श्री बाबा ने श्री गुरुवर जी से विदा ली तथा राधा बल्लभ का जयघोष करते हुए एवम् प्रचार करते हुए चल दिये । चैत्र मास की धूप व गर्मी को झेलते हुए एक जंगल में जो बधौला पृयला जटोला देवली और गोकल पुर गाँवों के बीच में पड़ता था अपना झूला एक पेड़ पर डाल दिया और मौन व्रत धारण किया (ये सभी गांव फरीदाबाद में लगते हैं)। वहाँ पर श्री बाबा को गोकलपुर के कुछ चरवाहे परेशान करने लगे । जब एक दिन श्री बाबा उन चरवाहों से ज्यादा परेशान हो गये तो उन्होंने अपना चमत्कार दिखाया और क्रोधित होकर बोले की तुम इधर मुझे परेशान कर रहे हो उधर तुम्हारे गाँव में आग लगी हुई है । जब उन चारवाहों ने देखा कि वहाँ पर सभी कुछ भस्म हो चुका है तो उन्होंने श्री बाबा के पैर पकड़ लिये तथा अपने अपराध के लिए क्षमा याचना करने लगे । इस पर श्री बाबा ने उन्हें क्षमा कर दिया । श्री बाबा के चमत्कार से प्रभावित होकर उन्होंने एक प्रार्थना और की कि हमारे इस जंगल में किसी भी कुएँ का जल मीठा नहीं हैं । सभी कुएँ खारी पानी के हैं । अगर आप अपने चमत्कार से एक कुएँ का भी जल मीठा कर दो तो आपका बहुत उपकार होगा । श्री बाबा ने उन चरवाहों की प्रार्थना मान ली और कहा कि जाओ उस कुएँ के पानी को पीकर देखो । जैसे ही उन चरवाहों ने उस कुएँ का पानी निकाल कर पिया तो वो मीठा निकला तो वो बहुत खुश हुए । जब उन्होंने पीछे फिर कर श्री बाबा की तरफ देखा तो श्री बाबा वहाँ से अंतर्ध्यान हो चुके थे । उन्होंने बाबा को इधर-उधर काफी तलाश किया परन्तु श्री बाबा कहीं भी नजर नहीं आये और अब उन लोगों का बसाया हुआ गाँव ततारपुर गाँव है ।

कुछ अन्तराल के पश्चात सन् १९३१ में श्री बाबा तिलपत गाँव के खजूरों के झांण्डे में बंसीवाले के तालाब पर प्रगट हुए । उस समय बंसीवाले का तालाब एक कच्ची जोहड़ थी । श्री बाबा का सबसे पहले साक्षातकार तिलपत गाँव के पंडित श्री खड़किया से हुआ । उस समय श्री बाबा के हाथ में एक डंडा था और झोली में एक पंचमुखी शंख तथा एक बंसी थी । पंडित खड़किया श्री बाबा को गाँव में घर पर ले आये तथा उसके बाद तिलपत के शिव मन्दिर पर रहने लगे और गाँव के लोग श्री बाबा को अन्धा बाबाजी कहते थे और धीरे-धीरे महाराज जी कहने लगे । गाँव में

शर्दियों में अपने मनोरंजन के लिए चौपई (होली) गाने की प्रथा थी । उसमें श्री बाबा ने ढोलक और हारमोनियम बजाया । इससे गाँव के सभी नर-नारी हतप्रभ रह गये । श्री बाबा सिद्ध-प्रसिद्ध दूरदर्शी श्री हरीवंश महाप्रभु चेतन के साक्षात अवतार थे । लेकिन इस सच्चाई को अन्त तक कोई नहीं जान पाया । एक दिन श्री बाबा ने गाँव के कुछ चुनिदा लोगों को इकट्ठा किया तथा अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर लोगों को अवगत कराया कि इस तिलपत गाँव के खेड़े के अन्दर अनगिनत लाशें लड़ाई के दौरान दब गई थीं जिसकी वजह से यह खेड़ा सुन्न व सोया पड़ा है इसी वजह से इस गाँव के वासियों की वंशबेल फलीभूत नही हो रही है । अगर आप लोग एक मन्दिर व धर्मशाला तथा उसके भरण-पोषण के लिए कुछ ज़मीन का दान देदें तो मैं इस खेड़े को जागृत कर दूँगा और तुम्हारी वंश वेल फलीभूत होने लगेगी ।। इस पर गाँव वाले राजी हो गये और श्री बाबा ने एक महामही पवित्र तिथि सोच कर एक कुआं और कुटिया का निर्माण किया । फिर श्री बाबा ने अपनी बंसरी में श्री राधा बल्लभ के महामंत्र का उच्चारण किया तथा गाँव वालों को इस मंत्र से अवगत कराया तथा इस सुन्न व सोये पड़े खेड़े को जागृत कर दिया इस पर ग्राम वासी बहुत खुश हुए । उसके बाद श्री बाबा ने एक कीर्तन मण्डली बनाई और सभी को राधा बल्लभ सम्प्रदाय की ओर आकर्षित किया । श्री बाबा ने तिलपत गाँव वासियों के दिल में बसे मतमतान्त्रों की आँधी व अंधकार को दूर किया और अपनी योग कला शक्ति द्वारा इस बस्ती को नई जागृति प्रदान की ।

'चौपाई'

तिलपत तिल की ओट में पाप रहा था छाय ।
दया करी गुरु देव ने बंसी दई बजाय ॥
बंसी दई बजाय ज्ञान की ज्योत जलाई ।
श्री हरिवंश स्वरूप रूप की कला दिखाई ॥

श्री बाबा राधा बल्लभ सम्प्रदाय के सुखदायक और श्री हिताचार्य महाप्रभु श्री हरीवंश के प्रिय गायक गुरुवर ने अनेकों अखण्ड कीर्तन एवम् श्री महाभागवत सप्ताह कराये तथा बाबा सूरदास जी महाराज तिलपत वाले के नाम से सिद्ध प्रसिद्ध हुए तथा अपना केन्द्र बिन्दू तिलपत को बनाया और अपनी अध्यक्षता में तिलपत की गद्दी को बड़ी मानकर श्री बाबा ने महातपुर, मबई, पल्ला, बल्लभगढ, वृन्दावन, जखौली अट्टा, जट्टा निठायरी, सूंगरपुर, दहीसरा, मंगरौली, भोगल बृजघाट (गंगा) और ऋषिकेश अनेक स्थानों पर श्री राधा बल्लभ के मन्दिरों का निर्माण कराया तथा तिलपत वाले के नाम से अपनी प्रभुसत्ता कायंम की ।

'पद'

कहाँ तक वर्णन करुँ गुरु गुण लिखा न जाई ।
अगाध समुद्र की तरंग भी गुरु माया जान न पाई ॥

श्री बाबा गुरुदेव ने जनहित एवम् जन कल्याण के लिए अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया । अपने ज्ञानोपदेशों से जो भी उनके सम्पर्क में आया, उनके अंधकार का निवारण किया ।

श्री बाबा ने वैसे भी अनेकों चमत्कार दिखाये । उदाहरण के तौर पर कहीं अंग भंग हुऐ पड़े हैं तो कहीं पाषाण देह धारण किये और कई लौकिक व अलौकिक लीलाएं दिखाई । ऐसे महान् संत दयावंत गुरुवर बाबा श्री श्री १००८ श्री किशोरी शरण सूरदास बाबा को मैं कोटी-कोटी प्रणाम करता हूँ । मेरा मानना है कि बाबा जैसा कि मैं पहले भी क़ह चुका हूँ कि श्री बाबा श्री हरीवंश महाप्रभु चेतन जी के साक्षात अवतार थे । जब भी कोई भगत जन प्रणाम स्वरूप जय जय श्री हरीवंश कहता था तो श्री बाबा मंद-मंद मुस्कुराते हुए प्रति उत्तर देते हुए ऐसा लगता था जैसे कह रहे हों कि अरे मैं वही तो हूँ, तुम मुझे पहचानो परन्तु हाय रे ! हमारा दुर्भाग्य उन्हें हम नहीं पहचान सके । इसके उपरान्त वो सभी को जानते थे और किसी-किसी हठधर्मी की तो कई-कई जन्मों की पोल पट्टी खोल दिया करते थे । ऐसे दयावन्त गुणवंत संत की महिमा का वर्णन कहाँ तक करूँ, इसका जितना भी वर्णन करें थोड़ा है और कोई शब्द बाकी बचते ही नहीं हैं ।

सेवक वाणी हठधर्मी प्रकरण से

इस पंथ में ही नहीं और वैसे भी आम समाज में हठधर्मी मिल जाते हैं जैसा कि आम देखने को मिल जाते हैं । अगर किसी के पास परमात्मा की कृपा से कुछ पुण्य संचित भी हो जाता है और कुछ धन भी तो वह अज्ञानता वश अपने आप को बहुत कुछ समझने लगता है तथा वह अपनी हठधर्मी दिखाने से बाज नही आता और वह यह भूल जाता है कि मुझे रास्ता बताने वाले यही हैं, फिर भी अपने अहम को न त्यागते हुए हठधर्मिता पर आ जाता है । इसी तरह के हठधर्मी भी श्री बाबा के इर्द-गिर्द मण्डराने लगे थे । श्री बाबा ने उनके जीवन में काफी सुधार लाने की कोशिश भी की थी और चमत्कार भी दिखाये पर वो नहीं सुधरे । श्री बाबा ने उनसे फिर अपना पीछा छुड़ाने की काफी कोशिश की परन्तु उन्होंने पीछा भी नही छोड़ा । अन्ततः श्री बाबा श्री १००८ श्री किशोरी शरण जी महाराज सूरदास अपने प्रिय भक्तजनों को अविरल आसुओं की धार बहाते हुए, रोते बिलखते हुए छोड़कर जनहित एवम् जन कल्याण के लिए अवतरित गऊलोक को संवत २०३६ की श्रावण मास की पूर्णिमा रक्षाबन्धन वाले दिन दिनांक 7 अगस्त सन् १९७९ को सिधार गये । जैसा कि देखने को मिला श्री बाबा कुछ हठधर्मी लोगों की हठधर्मिता से तंग आकर ऐसा करने को मजबूर हुए थे । इससे उन हठधार्मियों को सबक सीखना चाहिये और जो नये हठधर्मी मुँह उकसा रहे हैं उन्हें भी इससे सबक लेना चाहिये तथा जनहित एवम् जनकल्याण के श्री बाबा द्वारा बताये हुए रास्ते पर चलना चाहिए । इसी में ही उनका इस लोक तथा परलोक में कल्याण होगा ।

जय जय श्री हित हरिवंश:

इस भारत वर्ष की पुण्य भूमि पर अनेकों अवतार समय-समय पर होते रहे हैं । जब-जब भी धर्म-अधर्म के पनपते अंधकार में लोप होने लगता है, पुण्य पाप की तुलना में छीन हो जाता है और असत्य सत्य पर विजय पाने लगता है, तब - तब कोई ना कोई दिव्य आत्मा अवतरित होती है । भगवान विष्णु के अवतार सत युग में श्री नरसिंह रूप में, अवतरित हुए । श्री राम त्रेता युग में अवतरित हुए, द्वापर में श्री कृष्ण रूप में इसी प्रकार ऋषि -मुनियों एवं योगी महान आत्माओं को भी समय के अनुरूप अवतरित होना पड़ता है और अपना कार्यकाल पूरा करके अपने -अपने लोक को चले जाते हैं । इसी प्रकार श्री १००८ श्री बाबा किशोरी शरण जी (श्री बाबा सूरदास जी महाराज) अवतरित हुए थे । और इन्होंने उत्तर भारत में अपनी योग शक्ति द्वारा जनता को मोक्ष का द्वार दिखाया तथा श्री राधा बल्लभ सम्प्रदाय का विस्तार किया और इसका मूल मन्त्र जनता तक पहुँचाया । जिस प्रकार विष्णु भगवान के अवतारों की पूजा-अर्चना करने से मन को शान्ति एवं अनन्य प्रकार के फल प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार श्री बाबा की पूजा-अर्चना करने से भी भक्तजनों को अनन्य प्रकार के फल प्राप्त होंगे । क्योंकि वास्तव में श्री बाबा श्री महाप्रभु चेतन श्री हरीवंश जी के साक्षात अवतार थे । यह हमारा भ्रम है कि श्री बाबा अब प्रत्यक्ष रूप से यहाँ नहीं हैं यह मैं भी मानता हूँ, लेकिन वो अप्रत्यक्ष रूप से अब भी यहीं विद्यमान हैं । श्री बाबा राधा बल्लभ की अविरल भक्ति के स्रोत थे और भक्तजनों के प्रति सदैव चिन्तित रहते थे और इसी प्रकार श्री बाबा अपना जीवन जनहित एवं जनकल्याण के लिए समर्पित कर गऊलोक को सिधार गये । मेरी भक्तजनों से यही प्रार्थना है कि वो श्री बाबा के चरणों में अपना ध्यान लगा कर श्री बाबा द्वारा बताए गए मोक्ष द्वार की ओर अग्रसर हों और स्वच्छन्द रूप से राधा बल्लभ की युगल जोड़ी को अपने ध्यान में समेट कर अर्चना व पूजा प्रार्थना करें । इसी में हमारा इस लोक तथा परलोक में भी कल्याण होगा।

दोहा

आत्म शक्ति संत की करती सदा स्नेह ।
जैसी जाकी भावना वैसा ही फल देय ॥

मेरी पाठकों से करबद्ध प्रार्थना है कि मुझ अज्ञानी से अगर लेखन की कार्यशैली में लिखते समय कही कोई त्रुटी हो गई हो तो मुझे अपराधी न समझकर एक अज्ञानी ही समझें और इसके लिए मुझे माफी का दान देगें, ऐसी मैं आपसे आशा करता हूँ ।

* * *